**International Journal of Advanced Educational Research**
**ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12**
**www.educationjournal.org**
**Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 250-251**

# चन्देल कालीन : सैन्य पद्धति

**निशान्त कुमार**
शोध छात्र, इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

## प्रस्तावना

मध्यकालीन राजपूत शासकों के राजनीतिक पतन के कारण कुछ इतिहासकारों ने उनकी सैनिक–शक्ति की नीति की बराबर निन्दा की है। इतिहासकारों ने उनके सैन्य संगठन की दुर्बलताएं प्रकट करने की चेष्टा की है। उनका कथन है कि तत्कालीन हिन्दू शासकों ने इस कार्य की बड़ी ही उपेक्षा की। किन्तु यह कथन सर्वथा सत्य नहीं है क्योंकि प्रतिहार और चन्देल सम्राटों ने अपने कोष का अधिकांश सेना के संघटन, प्रशिक्षण और संरक्षण में व्यय किया।

राजपूत शासकों में से ऐसे बहुत कम थे जिनके पास नियमित रूप से स्थायी सेना रक्खी जाती थी। किन्तु बहुत से ऐसे प्रमाण है कि जिनसे यह निश्चित रूप से प्रकट होता है कि कन्नौज के प्रतिहारों, जैजाक भुक्ति के चन्देलों और बंगाल के पालों के पास नियमित स्थायी सेना थी। राज्य की स्थायी सेना के अतिरिक्त चन्देल–साम्राज्य के नगरों के पास रक्षा के निमित्त अलग से स्थायी सेना रहती थी। इस नगर सेनाओं के अधिकारी भी भिन्न होते थे। सेना में सामान्यतया तीन तत्व होते थे। नई परिस्थिति के प्रादुर्भाव के साथ रथ युद्ध का युग लद चुका था और असफल सिद्ध हो चुके थे। चन्देल सेना में कोई नौ सेना नहीं थी। किन्तु कविचन्द के वर्णन से ज्ञात होता है कि जब कभी उत्तर भारत के शासकों के साथ युद्ध छिड़ता था, तब अस्थायी नौ सेना बना ली जाती थी परन्तु वह प्रभावहीन होती होगी इसमें संदेह नहीं।[1]

चन्देल सेना वस्तुतः तीन प्रकार की थी पद्धति, अश्व और हस्ति। हस्ति सेना को काफी सुसंघटित किया गया था। मुसलमान इतिहासकार बतलाते हैं कि कालिंजर पर आक्रमण के समय महमूद ने अधिकतम संख्या में हाथी पकड़वाए थे। पैदल सेना की स्थायी संख्या थोड़ी ही होती थी। आवश्यकता पड़ने पर ही अस्थायी रूप से सेना की भरती कर ली जाती थी।[2]

चन्देल बहुधा स्थानीय लोगों में से सैनिकों की भरती करते थे। परन्तु बंगाल में अवस्था भिन्न थी। भागलपुर पत्र से ज्ञात होता है कि बंगाल की तत्कालीन सेना में गौड़ देश के अतिरिक्त खस, मालवा, कुलिक, कर्नाट और लाट देशों से भी सैनिक लिए गये थे। उसमें केवल भृत्य का कार्य करने वाले भाट ही जंगलों की युद्ध प्रिय जातियों में से भरती किये जाते थे। सेनापतियों और आल्हा–ऊदल जेसे उत्तरदायित्वपूर्ण कर्मचारियों का चुनाव मुख्यतया राज–परिवारों और सम्बन्धियों में से होता था। बड़े बड़े युद्धों में सामन्त प्रमुख स्वयं अपनी सेना के साथ लड़ते थे। इस व्यवस्था का परिणाम यह देखने को मिलता है कि सामन्त सेनाएं कभी राजभक्ति के विपरीत नहीं गई।[3]

अभिलेखों से उन कर्मचारियों के भी नाम प्राप्त होते है जो सेना में काम करते थे। सेना का सबसे बड़ा कर्मचारी महा सेनापति कहलाता था। राज्य की समस्त सेना उसी के अधीन होती थी। सम्राट के साथ उसका विश्वस्त व्यवहार चलता था। उसके नीचे प्रत्येक प्रमुख श्रेणी के लिए अलग–अलग सेनापति होते थे जो सेनाओं का निरीक्षण कार्य करते थे। सेना व्यूह का अलग उत्तरदायी कर्मचारी होता था जिसे महाव्यूपति कहा जाता था। सेना में काम करने वाले भृत्यों को भाट कहते थे। सैनिकों को मासिक वेतन दिया जाता था। प्रथमतः राजकीय कोष से नकद रूप में दूसरे, अन्न भंडारों से अन्न के रूप में। कर्मचारियों को सैनिकों की भांति या तो मासिक वेतन दिया जाता था, या शासन के अन्य कर्मचारियों की भांति गांव अथवा भूमि दे दी जाती थी। चन्देल शासन–व्यवस्था में आधुनिक क्षति–पूर्ति कानून जैसी सुविधा भी दी गई थी। त्रलोक्यवर्मन के गरी अभिलेख से ज्ञात हाता है कि जब कभी कोई कर्मचारी युद्ध के मैदान में मरता था तो सम्राट उसके उत्तराधिकारियों और आश्रितों को जीविका के लिए गांव प्रदान करता था।[4]

अन्य राज्यवंशों के कुछ अभिलेखों से ज्ञात होता है कि इस विभाग में कुछ और कर्मचारी थे जो विनिमय, सैन्य भोजनादि परिकल्प और चार–प्रयोग में लगाये गये थे। ये कर्मचारी थे– महासाधंनिक, गमागामिक और महापीलुपति। महापीलुपति हाथियों की सेना का प्रमुख रक्षक था।[5]

सम्राट स्वयं युद्ध के मैदान में सैन्य संचालन करता था। अत्यन्त प्राचीन काल से ही हिन्दू शासकों का यह पवित्र, कर्त्तव्य माना जाता था। वे शौर्य, रणकौशल और स्वदेश प्रेम के लिए अपने सैनिकों के समक्ष स्वतः उदाहरण बनते थे। लेकिन तत्कालीन कितने ही युद्धों के प्रमाण मिलते हैं, कि इस व्यवस्था में राजा के प्रथम पंक्ति से ओझल होते ही सैनिकों का संकल्प ढीला हो जाता था और वे निराश हो जाते थे। मध्य–युग की सैनिक–व्यवस्था का यह बड़ा ही कायरता पूर्ण चरित्र है, जिसका खण्डन नहीं किया जा सकता।[6]

पूर्व मध्यकालीन भारत में सेना का महत्व अन्य काल की अपेक्षा अत्यधिक बढ़ गया था और इस युग के सभी राजवंशों को अपनी सुरक्षा हेतु विशाल फौज का संचालन करना पड़ता था। राज्य को मुख्य खतरा पड़ोसी राजाओं से तो था ही, मुस्लिम आक्रान्ताओं से भी था।[7]

सेना का संगठन तीन भागों में था– पदाति सेना, अश्व सेना एवं हस्ति सेना श्री मिश्रा युद्ध सेना में रथों के उपयोग का उल्लेख करते हैं एवं एक अभिलेख एक मंत्री का रथ संचालन में निपुण होने का उल्लेख करता है।[8] परन्तु उसकाल तक आते–आते रथों की अनुपयोगिता सिद्ध हो चुकी थी और उनका उल्लेख मात्र पारम्परिक प्रतीत होता है।[9] तीरकमान, भाले और तलवारें इस काल के मुख्य हथियार थे।

सेना का प्रमुख सेनापति होता था। परमपराओं के अनुसार उसे ब्राह्मण अथवा क्षत्रीय होना अनिवार्य था। एक चन्देल अभिलेख में ब्राह्मण सेनापति का उल्लेख मिलता है जब राजा परमार्दिदेव को मदनपाल शर्मा नामक ब्राह्मण सेनापति को भूमिदान करने का उल्लेख किया गया है।[10] चन्देल कालीन अभिलेख सेना विभाग से संबंधित किसी मंत्री का विवरण नहीं देते परन्तु किसी मुख्य मंत्री की सेना सहित सभी विभागों के कुशल संचालन के लिए सराहना की गई है, और एक मंत्री को हाथियें और घोड़ों का प्रमुख बतलाया गया है।[11]

दुर्गों का संचालन एवं नियंत्रण राजा द्वारा नियुक्त पदाधिकारी द्वारा किया जाता था। भोज–वर्मन के समय का एक शिलालेख यह बतलाता है कि जजूक के कायस्थ परिवार के आनंद नामक व्यक्ति को त्रैलोक्यवर्मन ने जयपुर (अजयगढ़) दुर्ग का दुर्गाधिकारी नियुक्त किया था।[12] किलो से सम्बन्धि रखने वाले जिस कर्मचारी का नाम ज्ञात है, वह कोटपाल था, उसे कहीं–कहीं दुर्गाध्यक्ष भी कहते थे।[13]

दुर्ग अधिकारी या विषयपति निश्चित रूप से सेना विभाग के

अधिकारी थे और युद्धों में सक्रिय भाग लेते थे। दुर्गों का राष्ट्रीय सुरक्षा में एक महत्वपूर्ण स्थान था।[14] दुर्गों का चन्देल सेना हेतु विशेष महत्व था।[15]

राजनीतिक इतिहास के विवरण से चन्देल राज्य में कालिंजर, अजयगढ़, महोबा एवं अन्य जगह के किलों की महत्ता स्वयं सिद्ध हैं चन्देल राज्यवंश का समूचा इतिहास कालिंजर के किले एवं कुछ अंशों में अजयगढ़ किले के इर्द गिर्द घूमता हैं अनेकों बार कालिंजर के आधिपत्य ने इस वंश का राजनीतिक भविष्य निर्धारित किया हैं चन्देल राज्य में दुर्गों की अत्यधिक महत्ता इनकी भौगोलिक स्थिति एवं तत्कालीन युद्ध–तंत्र के कारण थी।[16]

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि चन्देलों ने एक संगठित सैन्य व्यवस्था बनायी रखी थी, जिसके आधार पर उन्होंने अपनी आक्रमकता को धार दिया तथा दुर्गों का निर्माण कर अपनी रक्षात्मक नीति को भी मजबूती प्रदान की।

## सन्दर्भ


1. केशव चन्द्र मिश्र :– चंदेल और उनका राजत्व काल; पृ0सं0 164–165
2. वही; पृ0सं0 165
3. वही; पृ0सं0 166
4. अयोध्या प्रसाद पाण्डेय :– चन्देल कालीन बुंदेल खण्ड का इतिहास
5. वही
6. एन0एस0 बोस :– हिस्ट्री ऑफ दि चंदेल ऑफ जेजाकभुक्ति; पृ0सं0146
7. वही
8. इपिग्रेफिया इण्डिका :– भाग–1; पृ0 201
9. एन0एस0 बोस :– हिस्ट्री ऑफ दि चंदेल ऑफ जेजाकभुक्ति; पृ0सं0 140
10. इंडियन ऐण्टिक्वेरी :– भाग 25; पृ0 207
11. इपिग्रेफिया इण्डिका : भाग–1, पृ0सं0 200
12. एन0एस0 बोस :– हिस्ट्री ऑफ दि चंदेल ऑफ जेजाकभुक्ति
13. वही
14. एस0के0 सुल्लेरे :– अजयगढ़ और कालिंजर की देव प्रतिमाएँ, पृ0 18
15. वही
16. वही